

शिक्षक दिवस विशेष:

शिक्षक की ओर निहार रहा देश

## आपदा को अवसर में बदलें शिक्षक

नवाचारी व कर्मठ शिक्षक समय की मांग। खुद को राष्ट्र निर्माता सिद्ध करने की चुनौती सामने।

### डॉ० घनश्याम बादल

कोरोना संक्रमण के बीच इस बार का शिक्षक दिवस बिल्कुल अलग परिस्थितियों में आया है। बच्चों से हर वक्त घिरे रहने वाला शिक्षक आज उनसे दूर बैठकर ऑनलाइन कक्षाएं ले रहा है। अब यह परिस्थितियों की मांग है कि शिक्षक काल एवं परिस्थितियों के अनुसार शिक्षण की शैली एवं माध्यम दोनों में खुद को इस तरह समायोजित करें कि एक और स्वयं वह तथा उसका सम्मान बना रह सके तथा दूसरी ओर उसके विद्यार्थियों को भी वह सब मिल सके जिसकी उसे न केवल आज जरूरत है अपितु आने वाले समय में भी उसके जीवन के लिए वह एक बहुयोगी उपहार ज्ञान के रूप में उससे प्राप्त कर सकें।

शिक्षा का मूल उद्देश्य भविष्य के ऐसे नागरिक तैयार करना होता है जो अपने समय के समाज एवं देश के कल्याण एवं उत्थान के लिए कार्य कर सकें एक व्यक्ति के रूप में अपना सर्वांगीण विकास कर सकें तथा परिपक्व होने पर आने वाली पीढ़ी के लिए एक ऐसा मंच तैयार कर सके कि वह काल परिस्थिति एवं आवश्यकताओं के अनुरूप भविष्य का निर्माण संरक्षण एवं संवर्धन कर सकें।

शिक्षक सदा समाज की धुरी रहा है और समाज को दिशा देने में शिक्षक से अधिक महत्वपूर्ण भूमिका शायद ही किसी और की रही हो। कहने को तो नेता, प्रशासक, शासक एवं कर्मचारी मिलकर राष्ट्र का संचालन एवं निर्देशन करते हैं लेकिन गहराई से देखा जाए इन सब को गढ़ने का काम शिक्षक ही करता है। वह पूर्व प्राथमिक स्तर से जब एक शिक्षार्थी के रूप में बालक को स्वीकार करता है तब वह बालक एक कच्ची मिट्टी के घड़े के समान होता है और परिवार से वह बहुत थोड़ा सा ज्ञान व समझ ले कर ही विद्यालय पहुंचता है। अब आगे उस बच्चे को शिक्षित करने का काम करता है शिक्षक।

शिक्षक का कार्य केवल अक्षर ज्ञान कराने या पुस्तकीय ज्ञान देने , परीक्षा में पास होने के गुर सिखाने तक सीमित नहीं कहा जा सकता। भले ही दायित्व के रूप में उसे परीक्षा परिणाम देना होता है तथा गुणवत्ता परीक्षा परिणाम के लिए आजकल उसे उत्तरदायी भी बना दिया गया है लेकिन यदि प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा को छोड़ दें तो माध्यमिक शिक्षा में परीक्षा या पाठ्यक्रम से संबंधित विषय सामग्री का लगभग 60 से 70% तक विद्यार्थी सहायक पुस्तकों, पाठ्य पुस्तकों, नेट या दूसरे माध्यमों से आसानी से प्राप्त कर लेता है। आज का विद्यार्थी कक्षा में दिए जाने वाले व्याख्यान पर भी पूरी तरह निर्भर नहीं है सच कहें तो यदि शिक्षक का ज्ञान एवं तकनीकी अपडेटेड ना हो तो आज का विद्यार्थी उसके कक्षा कक्ष में किए गए शिक्षण पर अधिक ध्यान नहीं देता या फिर यूँ कहिए कि वह अब शिक्षक के पीछे नहीं अपितु शिक्षक से आगे चलने वाला विद्यार्थी बनकर उभर रहा है और इसकी वजह है विभिन्न प्लेटफॉर्म पर प्राप्त गुणवत्तापरक व बहुतायत में उपलब्ध सामग्री।

यूट्यूब, गूगल, दीक्षा, स्वयंप्रभा, ई पाठशाला, दूरदर्शन के प्रसारण, विभिन्न निजी चैनलों के द्वारा शैक्षिक सामग्री एवं पाठों का प्रसारण आदि अब आसानी से उपलब्ध हैं और आर्थिक रूप से सक्षम अभिभावक अपने बच्चे के लिए यह सब उपलब्ध करा रहे हैं। रही सही कमी कोचिंग सेंटरों ने पूरी कर दी है यानी इस दृष्टि से सोचें तो आज के विद्यालय शिक्षक का स्थान लेने के लिए बहुत सारे विकल्प तत्पर एवं उद्यत हैं। तो क्या इसका मतलब यह समझा जाए कि अब शिक्षक की कोई आवश्यकता नहीं रह गई है अथवा कक्षा कक्ष- शिक्षण की महत्ता समय के साथ कम होते हुए खत्म होने की ओर बढ़ रही है? तो इस प्रश्न का उत्तर 'हां' भी है और 'नहीं' भी। यदि शिक्षा का अर्थ केवल ज्ञान प्राप्त करना या सैद्धांतिक शिक्षा प्राप्त करना है तो निश्चित ही शिक्षक का अस्तित्व एवं वर्चस्व खतरे में है लेकिन ऐसा है नहीं।

कभी ऑस्ट्रेलिया में 'डी स्कूलिंग' पर बड़े प्रयोग हुए और मात्र एक दशक में ही डी स्कूलिंग का कंसेप्ट पूरी तरह धराशाई हो गया और उस से हुए नुकसान की भरपाई करने में ऑस्ट्रेलिया को एक लंबा समय लगा। डी स्कूलिंग का प्रतिफल जो निकला वह यह था कि तर्क एवं ज्ञान के स्तर पर तो वहां के युवाओं की 'आई क्यू' काफी ऊंची चली गई लेकिन उनका 'ई क्यू' यानि भावनात्मक संवेग इतना नीचे पहुंच गया कि वहां अनेक प्रकार की सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याएं खड़ी हो गई। भौतिक लब्धि के नशे में चूर वहां का समाज हिंसक होकर बिखराव की कगार पर पहुंच गया अपराधों की दर बेहद ऊंची हो गई और इससे वहां प्रशासनिक समस्याएं भी खड़ी हुई। अंततः स्कूल फिर से अस्तित्व में ही नहीं आए अपितु आज भी समाज को दिशा देने का काम कर रहे हैं। समय के साथ परिवर्तन अवश्यभावी है। बिना परिवर्तन के प्रगति संभव भी नहीं है और जो समय के साथ नहीं बदलता समय उसे पीछे छोड़ कर आगे निकल जाता है। आज के शिक्षा के परिवेश एवं स्वरूप तथा माध्यम के साथ-साथ शिक्षक को भी इस बदलाव के साथ बदलना होगा। अब चॉक, डस्टर, श्यामपट्ट प्रयोग करने वाले या व्याख्यान देने वाले शिक्षक बच्चों को आकर्षित नहीं करते। शिक्षक केंद्रित शिक्षण के जमाने में भी अब लग गए हैं।

आज शिक्षक के ऊपर विद्यार्थियों या अभिभावकों की निर्भरता भी लगातार घट रही है जिसके चलते शिक्षक के प्रति उनका श्रद्धा भाव या भावनात्मक लगाव भी अब बहुत कम हो गया है तथा शिक्षक को भी समाज में अब एक वेतन पाने वाले कर्मचारी के रूप में देखने वाले लोग बड़ी संख्या में हो गए हैं। सच यह भी है कि शिक्षा या ज्ञान की प्राप्ति केवल पुस्तकों बुद्धि लब्धि या तर्क शास्त्र के नियमों से नहीं हो सकती है। बेशक, वहां तर्क काम करता है लेकिन यदि शिक्षक एवं विद्यार्थी के बीच में एक आत्मिक लगाव एवं जुड़ाव होता है तब ज्ञान केवल तार्किक नहीं रह जाता अपितु भावनात्मक तथा व्यवहारिक भी हो जाता है। अब यह शिक्षक की जिम्मेदारी है कि बेतहाशा दौड़ते हुए आज के इस युग में उसे एक ऐसा ठहराव लाना है जिससे गति भी बाधित न हो एवं मानसिक संवेग, मनोभाव, दया, करुणा, सहानुभूति, आत्मानुभूति तथा सौहार्द्र जैसे गुण बचे रह सके।

बेशक, आज के डिजिटल संसार में शिक्षक का तकनीकी रूप से सक्षम एवं दक्ष होना आवश्यक नहीं अपितु अनिवार्य हो गया है। वउसे अधुनातन तकनीकियों का प्रयोग अधिकार के साथ करना आना चाहिए। उसके शिक्षार्थी या शिष्य उसका सम्मान तभी करेंगे जब है उन्हें उस सामग्री से इतर व श्रेष्ठ सामग्री दे सके जो विभिन्न प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध नहीं है क्योंकि यदि बच्चे को उसी सामग्री को पढ़कर देखकर यह सुनकर ही ज्ञान प्राप्त करना है सब है शिक्षक पर आश्रित क्यों होगा? वस्तुतः शिक्षक को ज्ञान संप्रेषण हेतु उपयोगी, व्यवहारिक, अपग्रेडेड एवं गुणवत्ता परक सामग्री रोचक तरीके से शिक्षार्थियों तक पहुंचाने की होगी और इसके लिए यह जरूरी नहीं कि सारे समय वही बोलता रहे, अधिकांश समय वही प्रस्तोता हो बल्कि उसे अपने विद्यार्थियों को इस प्रकार से 'प्रो एक्टिव' रखना होगा कि कक्षा के केंद्र बिंदु वही रहे और शिक्षक कक्षा में एक पर्यवेक्षक या फैसिलिटेटर की भूमिका में रहे। वह बच्चों को उपयुक्त शैक्षिक वातावरण प्रदान करे उनमें उत्कंठा, जिज्ञासा एवं कटिबद्धता पैदा करे। अपने विद्यार्थियों में जागरूकता एवं तार्किकता के साथ-साथ दूसरों के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री को स्वीकार्यता प्रदान करना उसमें से काम की विषयवस्तु का चयन करना एवं उसको अपनी व्यवहारिक जीवन में उपयोग करना सिखाना होगा। आने वाला समय शिक्षकों के लिए और भी चुनौती भरा होने वाला है। यदि 2020 में कोविड-19 संक्रमण एक आपदा के रूप में आया है तो यह एक अवसर भी है कि शिक्षक आने वाली परिस्थितियों को भांपकर बिना विद्यार्थियों के भौतिक संपर्क में आए किस प्रकार से उनकी शिक्षा को आगे बढ़ा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा के इस दौर में उसकी उपयोगिता के साथ-साथ उसकी सीमाएं एवं बच्चों तथा शिक्षकों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले को प्रभाव भी सामने आए हैं। अब यह शिक्षक की महती जिम्मेदारी हो गई है कि वह ऑनलाइन शिक्षा की परिधि को बढ़ाए। इसकी सीमाओं एवं जटिलताओं व कठिनाइयों का निवारण करने के लिए नवाचार के लिए आगे आए। अपने विद्यार्थियों को हौसला दे उन्हें समझाएं कि केवल पाठ्यक्रम की परीक्षा ही परीक्षा नहीं होती अपितु यह पूरा जीवन ही एक परीक्षा है और इसमें समय - समय पर उन्हें कसौटी पर कसा जाएगा जिसमें केवल वही वर्चस्व बनाए रख सकेंगे जो समय की धार के साथ परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को ढाल लेंगे और यह बात केवल शिक्षार्थियों पर ही नहीं शिक्षकों पर भी लागू होती है। संकट के इस दौर में जहां निजी

स्कूलों की अनेक शिक्षक अपनी नौकरियां खो चुके हैं बड़ी संख्या में आधे या उससे भी कम वेतन पर काम कर रहे हैं । ट्यूशन एवं कोचिंग संकट के दौर में हैं और सरकारी नौकरियां ना के बराबर उपलब्ध हैं तब शिक्षक बनने के इच्छुक भावी शिक्षक और वर्तमान शिक्षक दोनों को ही अपना स्वरूप बरकरार रखते हुए अपने शिक्षार्थियों तथा राष्ट्र के निर्माण के लिए एक बार फिर से अग्रिम मोर्चे पर डटना होगा।

---

**कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें**

